मूरख करि न ख्वारु, चोरासीअ में पाण खे,
अगहीं रुलिएं केतिरो, हाणे थीउ होशियारु,
मिली महद् जननि सां, पंहिंजो करि उधारु,
अहिड़ो समो सारु, सामी लहंदें कीनकी.

अज्ञानी/मूर्ख मनुष्यों को समझाते हुए सामीजी कहते हैं, ''हे अज्ञानी मनुष्य! तुम स्वयं को चौरासी लक्ष योनियों में भटका कर अपना अहित मत करो। तुम इसके पहले बहुत भटक चुके हो। तब कहीं तुम्हें यह दुर्लभ देह प्राप्त हुई है। इसलिये तुम सजग, होशियार हो जाओ, इस मनुष्य जन्म में तुम संत-महात्माों और सतगुरु से मिल कर अपना उद्धार करो। अपना उद्धार करने के लिए, जीवन सफल करने के लिए ऐसा सुनहला अवसर तुम्हें दुबारा मिलने वाला नहीं है।''

सभी संत-महात्मा कहते हैं कि मनुष्य के रूप में जन्म एक बार ही मिलता है। चौरासी लक्ष योनियों में भटकने और असंख्य दु:ख भोगने के पश्चात् यह अनमोल देह प्राप्त होती है। सभी प्राणियों में मनुष्य जन्म मिलना श्रेष्ठ माना गया है। अत: यह नरदेह धन्य है। सोच-विचार करने और तदनुसार कृत्य/कार्य करने की अपार शक्ति केवल मनुष्य को ही प्राप्त है। यह देह मिलने से ही हम ईश्वर की प्राप्ति के लिए, नर-देह सफल करने के लिए एवं मोक्ष के लिए भक्ति कर सकते हैं। अर्थात् यह सब करने के लिए अंतर्ज्ञान आवश्यक है। स्वयं को, अपने आप को पहचानना जरूरी है। मैं मात्र देह नहीं, मैं स्वयं परमात्मा का अंश हूँ, मैं ही परमेश्वर हूँ। (अहं ब्रह्मास्मि।)। इसका ज्ञान मनुष्य-शरीर में ही हो पाता है। हम इसी जन्म में अपने भीतर के अंधकार को, अज्ञान को दूर कर सकते हैं। अन्य किसी जन्म या देह द्वारा यह संभव नहीं है।

साधारण जीव अज्ञानी होते हैं। इस कारण वे माया के भँवर-जाल में उलझ कर अपना अनमोल जन्म व्यर्थ गँवाते हैं। जीवन सफल करने के लिए उन्हें संत-सतगुरु की शरण में जाना चाहिए। उनके मार्गदर्शन और कृपा से अंतर्ज्ञान प्राप्त हो सकता है। जन्म-मृत्यु के कुचक्र से छुटकारा पाने का मार्ग मिल सकता है। उस मार्ग पर चलकर मोक्ष प्राप्त कर सकने का यही एक अवसर है। यह अवसर पुन: मिलने वाला नहीं है। अत: अज्ञान की इस निद्रा से जागना जरूरी है।

रात गँवाई सोय कर, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय॥
(कबीर)

■